Padma Bhushan



SHRI DARSHAN LAL JAIN

Shri Darshan Lai Jain is the President of Saraswati Nadi Shodh Sansthan which was constituted in 1999 for the revival of Saraswati River. He is also the President of Yodha Samarak Samiti, an organisation to commemorate the forgotten Heroes of the Nation. Shri Jain is recognized across the country for his selfless service and continuous contribution to various projects directed towards the benefit of the society.

2. Born on December 12, 1927, Shri Jain graduated from Punjab University. From childhood days itself, Shri Jain was a staunch patriot and stood up alone against Headmaster in school to oppose British War efforts. He also participated in the Quit India Movement. Shri Jain joined RSS in 1944 and remained Haryana State President for 40 years. In between, he declined numerous offers of "MLC Sure Seat" and "Governorship".

3. Shri Jain has immensely contributed in the field of education. Under his Presidentship of Shiksha Samiti" for 30 years, the number of schools under the Samiti increased to about 100 which included the prestigious Geeta Niketan Residential School (Kurukshetra)., Hindu High School (Mewat) and Nand Lal Geeta Vidya Mandir Vill- Tepla (Ambala) which serves as a free education cum boarding centre for poor students.

4. Shri Jain has worked relentlessly for tracing and reviving the extinct river – 'Saraswati'. Through his collaboration with experts from ONGC, ISRO, GSI, ASI, BARC. Kurukshetra University and renowned scholars like Prof. K.S. Valdiya, he has once again put the so called "Lost River" back on the map. Shri Jain, as founder President of Yodha Samarak Samiti, has helped revive the memory of great sacrifices of the 'Forgotten Warriors of the Nation'. He has written a book titled "A Brief history of India" which depicts the role played by our martyrs instead of the current practice of eulogizing the invaders. Shri Jain is now working to remedy these distortions in the books on history and also pursuing construction of war memorials at Panipat and Karnal.

5. Shri Jain has gained numerous honours and praises countrywide for his work. Recently he received -Tamrapatra" from Govt. of Haryana as a recognition of hardship faced by him during emergency period (1975-1977). He has been applauded by Bharat Ratna Dr. A.P.J. Abdul Kalam for his commendable work in reviving Saraswati river. At times, many eminent personalities like Sh. Mohan Bhagwat. Sh. Ashok Singhal, Dr. Murli Manohar Joshi, Prof K.S. Valdiya and Dr. Harshavarshan have also praised him for his service through personal letters. Shri Jain is also a tall figure in Jain Samaj and has been felicitated many times by the likes of Acharya Muni Sh. Vidya Sagar Ji Maharaj and Muni Sh. Gupti Sagar Ji Maharaj for his valuable contribution to the Samaj. Apart from Jain Samaj. Shri Jain is also blessed by saints like Jagadguru Sri Jayendra Saraswathi Shankaracharya Ji Maharaj, Swami Kalyandev Ji Maharaj and Swami Shankar Ashram Ji Maharaj of Chitrapur Math.

श्री दर्शन लाल जैन



श्री दर्शन लाल जैन, सरस्वती नदी के पुनरुत्थान के लिए 1999 में गठित सरस्वती नदी शोध संस्थान के अध्यक्ष हैं। आप योद्धा स्मारक समिति के भी अध्यक्ष हैं, जो कि देश के विस्मृत योद्धाओं की स्मृति में बना एक संगठन है। आप समाज के लाभ के लिए संचालित विभिन्न परियोजनाओं में अपनी नि:स्वार्थ सेवा और सतत योगदान के लिए देश भर में जाने जाते हैं।

2. आपका जन्म 12 दिसम्बर, 1927 को हुआ। आपने पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातक किया। आप एक समर्पित देशभक्त थे और अंग्रेजों के युद्ध प्रयासों का विरोध करने के लिए स्कूल में हेडमास्टर के खिलाफ अकेले खड़े थे। आपने भारत छोड़ो आंदोलन में भी भाग लिया। आप 1944 में आर.एस.एस. में शामिल हुए और 40 वर्षों तक हरियाणा के राज्य अध्यक्ष बने रहे। इस बीच, आपने "एम एल सी सुनिश्चिम सीट" तथा "राज्यपाल के पद" के कई प्रस्ताव ठुकराए।

3. आपका शिक्षा के क्षेत्र में बहुत योगदान रहा। 30 वर्षों तक 'शिक्षा समिति' की आपकी अध्यक्षता के तहत समिति के अंतर्गत आने वाले स्कूलों की संख्या बढ़कर लगभग 100 हो गई जिसमें प्रतिष्ठित गीता निकेतन आवासीय स्कूल (कुरुक्षेत्र), हिंदू हाई स्कूल (मेवात) और नंद लाल गीता विद्या मंदिर गांव-तेपला (अंबाला) शामिल है जो कि गरीब विद्यार्थियों के लिए मुफ्त शिक्षा एवं आवासीय केंद्र के रूप में कार्य कर रहे हैं।

4. आपने विलुप्त नदी- 'सरस्वती' का पता लगाने और उसके पुनरुत्थान के लिए अथक प्रयास किए हैं। ओ एन जी सी, इसरो, जी एस आई, ए एस आई, बी ए आर सी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय और प्रसिद्ध विद्वानों जैसे प्रो. के. एस. वालडिया के सहयोग से आप ने एक बार फिर "विलुप्त नदी" मानचित्र में वापस ले आए हैं। आपने योद्धा स्मारक समिति के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में देश के विस्मृत योद्धाओं के महान बलिदानों की स्मृति को फिर से ताजा करने के लिए कार्य किया। आपने एक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक है "ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ इंडिया" जिसमें आक्रमणकारियों के गुणगान करने की वर्तमान प्रथा की बजाए हमारे शहीदों की भूमिका का वर्णन है। आप आजकल इतिहास पर लिखी पुस्तकों में इन विसंगतियों को सुधारने के कार्य में लगे हुए हैं और साथ ही पानीपत और करनाल में युद्ध स्मारकों के निमार्ण कार्य में भी लगे हैं।

5. आपको कई सम्मान प्राप्त है और आपके काम के लिए देश भर में आपकी प्रशंसा की जाती है। हाल ही में आपको, आपातकाल (1975-1977) के दौरान आपके द्वारा जिस कठिनाई का सामना किया गया उसके लिए सम्मानस्वरूप हरियाणा सरकार से 'ताम्रपत्र' प्राप्त हुआ है। सरस्वती नदी के पुनरुत्थान के लिए किए गए आपके उल्लेखनीय कार्य के लिए आपकी सराहना की गई। समय-समय पर, कई प्रतिठिष्त व्यक्तियों जैसे श्री मोहन भागवत, श्री अशोक सिंघल, डा. मुरली मनोहर जोशी, प्रो. के. एस. वालडिया और डा. हर्षवर्धन ने भी आपकी सेवा के लिए व्यक्तिगत पत्रों द्वारा आपकी प्रशंसा की। आप जैन समाज में एक जानी-मानी हस्ती भी हैं और आचार्य मुनि श्री विद्या सागर जी महाराज और मुनि श्री गुप्ती सागर जी महाराज द्वारा समाज में आपके महत्वपूर्ण योगदान के लिए आपको कई बार सम्मानित किया गया। आपको जगद्गुरु श्री जयेन्द्र सरस्वती शंकराचार्य जी महाराज, स्वामी कल्याणदेव जी महाराज और चित्रपुर मठ के स्वामी शंकर आश्रम जी महाराज जैसे संतों का आर्शीवाद भी प्राप्त है।